OM 21 DELHI_Page 1 and 2 14/01/2015 07:53 Page 6

राँची। 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए समाजसेवी राजकुमार केडिया, एलीमेंट होटल निदेशक मीनू घई, फ्रांस से आईं ब्र.कु. वैलेरी, ब्र.कु. निर्मला तथा गायिका लिली मुखर्जी।

नूर कम्पाउण्ड-गया। आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अधिवक्ता अखिलेश कुमार वाडियार, प्रसिद्ध समाजसेवी विमलदेव प्रसाद यादव, प्रसिद्ध व्यवसायी दामोदर प्रसाद केसरी, ब्र.कु. शीला व अन्य।

केसरीसिंहपुर-राज.। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए व्यापार मंडल अध्यक्ष राजेश गर्ग, आर.एस.एस. नगर प्रधान हंसदेव बंसल, ब्र.कु. पंचमसिंह व ब्र.कु. वंदना।

वाढ़-बिहार। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए आई.ए.एस. मनोज तिवारी, सर्जन बी.पी. सिंह, ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।

सम्बलपुर-ओडिशा। '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम के बाद पूर्व सांसद सुरेन लाठ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती। साथ हैं ब्र.कु. राम प्रकाश।

रामपुर-मनिहारान। पुस्तक मेले के समापन पर गोचर महाविद्यालय के प्रिंसीपल डॉ. चन्द्रशेखर से सर्टीफिकेट प्राप्त करते हुए ब्र.कु. सन्तोष।

अपने चित्त को निर्मल करो

समस्त विश्व जिनकी ओर प्यासी नज़रों से देख रहा है। वे महान आत्माएं कहाँ देख रही हैं? विश्व अपने कल्याणकारी पूर्वजों की बाट जोह रहा है-वे विश्व कल्याणी आत्माएं किसका इंतज़ार कर रही हैं? जिन्हें वसुंधरा पर प्रेम और सद्भावनाओं की गंगा बहानी है, वे स्वयं किस बहाव में बह गये हैं? ये आवाज़ उठी एक आत्मा के अन्तर्मन से और उसके अंदर जाग उठी उसके महान कर्त्तव्यों की स्मृति।

''जब हमारा बाह्य मन शांत हो जाता है, तब हम अपने अन्तर्मन में जो भी श्रेष्ठ संकल्प या भावना भरते हैं, वह तुरंत ही धारण हो जाती है''-

इस सूक्ष्म सिद्धांत को जानकर शीघ्रता से स्वयं को योग्य बनाया जा सकता है। सरल शब्दों में यों कहें कि जब हमारा मन शांत हो जाता है तो बुद्धि की ग्रहण शक्ति बढ़ जाती है और तब जो भी संकल्प हम करते हैं, बुद्धि तत्काल उसका स्वरूप बन जाती है।

अमृतवेले सहज ही हमारा मन शान्त हो जाता है, उस समय जिस भी स्वमान या श्रेष्ठ स्मृति को हम स्वयं में लायेंगे, हम सहज ही उसका स्वरूप बन जायेंगे। मन को योगयुक्त शान्त करके जब हम यह याद करते हैं कि ''मैं एक विजयी आत्मा हूँ'' तो विजय हमारा स्वरूप बन जाता है। अमृतवेले को यह वरदान है,और बुद्धिमान रूहों को चाहिए कि इसका लाभ उठाएं।

चुनौतियां

चमत्कारिक परिवर्तन की चुनौतियां लेकर आ रहा है, यह नव वर्ष। जिनके दिव्य नयन भविष्य को देखने में सक्षम हैं, वे जानते हैं-अब क्या-क्या होगा। मनुष्य की पुकार, उनकी चीत्कार, उनका रुदन और भय, चिन्ताएं और मोह के कारण हुआ दु:ख व कष्ट मनुष्यों की यातनाओं का इतिहास दोहरायेंगे। परंतु कोई किसी को दोष दे नहीं पायेगा। इसके ज़िम्मेदार होंगे मनुष्य के पाप कर्म, उसकी दूषित वृत्तियां व उसका लोभ। तो आओ स्वयं को तैयार कर लें इन चुनौतियों का सामना करने के लिए-पहली तैयारी है स्वयं के चित्त को निर्मल करने की।

निर्मल चित्त क्या है? वह चित्त जिसमें किसी के लिए भी क्रोध व बदले की भावना की अग्नि न जलती हो-वह चित्त जिसमें ईर्ष्या व घृणा का घुन न लगा हो-ऐसा चित्त जिसमें कोई भी कटुता शेष न रह गई हो-निर्मल चित्त कहलाता है। मन की यही स्थिति सम्पूर्ण निर्विकारी स्थिति कहलाती है। मन की यही स्थिति विश्व कल्याणकारी स्थिति कहलाती है।मनुष्य की अपनी ही बुरी भावनाएं उसे दु:ख दे रही हैं। बुरी भावनाओं वाला व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता और जिसके मन में क्रोध की ज्वाला दहकती हो, वह कभी शक्तिशाली नहीं बन सकता।

समय का आह्वान है

मन को शुद्ध करो-निर्मल मन से सुख की सरिता बहेगी और विश्व में हरियाली छा जायेगी। बहुत काल बीत चुका है दूषित मन को अंदर में संजोये। अब जबकि स्वयं भगवान हमारा श्रृंगार कर रहा है- जबकि समय हमारा आह्वान कर रहा है-तो हम अपने अंदर संभाल कर रखी हुई इन बुरी भावनाओं को कूड़ा समझकर बाहर फेंक दें।

अब समाप्ति का समय है और पुन: सबका बिछुड़न हो जायेगा-कोई भी किसी को नहीं पहचानेगा। तो क्यों न हम इस अंतिम समय को स्नेह की लेन-देन करते हुए बितायें। ज़रा अपने चित्त में अंदर झांक कर देख लें किस-किसके लिए क्रोध है? किस-किस के लिए

बदले की भावना है? किस-किस को मज़ा चखाना चाहते हैं? और अपने से पूछें कि इन सबसे क्या होगा? क्या आत्म-तृप्ति....? नहीं... नहीं...। इसे आत्म-संतुष्टि मानने के अज्ञान को प्रकाश में बदलें तो जीवन प्रकाशित हो जायेगा।

याद रहे-योगियों की शुभ भावनाएं, विश्व कल्याण का आधार है और जिन्हें विश्व महाराजन बनना है, उन्हें विश्व कल्याणकारी बनना ही होगा। महान आत्माओं की शुभ भावनाएं समस्त विश्व का सहारा है-पुण्य आत्माओं की शुभ भावनाएं पाप को नष्ट करने वाली है और धर्म सम्पन्न आत्माओं की शुभ भावनाएं सर्वश्रेष्ठ धर्म की स्थापना करने वाली हैं। इसलिए अपनी भावनाओं को शुद्ध करो। याद रहे जो आत्माएं भावनाओं को स्वच्छ नहीं करेंगी, उनका जलता हुआ मन विनाश अग्नि के समय उन्हें ही अत्यंत कष्ट देगा और वे रूहें उस कार्य को भी नहीं कर पायेंगी जिसके लिए विश्व-रक्षक ने उनका आह्वान किया था।

अधिकार प्राप्त करें

भगवान से मांगना तो भक्ति है। पुरुषार्थ के द्वारा उससे कुछ प्राप्त करना तपस्या है। परंतु अधिकार से कुछ ले लेना ही बुद्धिमानी है और उसका वरदान है।

जो भगवान के आज्ञाकारी वत्स बन गये हैं, जिन्होंने अपने प्यार की डोरी में उसे बांध लिया है, जिन्होंने स्वयं को उस पर सम्पूर्ण समर्पण कर दिया, वे उसके अधिकारी बच्चे बन गये हैं। न केवल भगवान की सम्पूर्ण सम्पत्ति पर उनका अधिकार हो गया है, बल्कि स्वयं भगवान पर भी उनका अधिकार है।

''भगवान पर अधिकार'' उनकी सर्व शक्तियों पर अधिकार-उनके सर्व वरदानों पर अधिकार- ज़रा विचार करें-क्या इससे बड़ा भाग्य अन्य कुछ होगा!

क्या ऐसा समय पुन: कभी आयेगा जब वो स्वयं भी कहेगा कि ''बच्चे, भगवान तुम्हारी मुट्ठी में है''। सुना तो है भगवान को गोपियां नचाती थीं। अब वही समय है और कल्प में केवल एक बार ही यह अधिकार प्राप्त होता है। क्या करना चाहिए? स्वयं सोच लें। अधिकारों का फायदा उठाना सीख लें। अधिकार से, उससे सब कुछ प्राप्त करना सीख लें और इसकी विधि है-'इन सब अधिकारों की स्मृति'। मुख्य रूप से हमें अधिकार है-सर्व शक्तिवान की सर्व शक्तियों पर, हमें अधिकार है उसके ज्ञानधन पर, हमें अधिकार है सम्पूर्ण भाग्य पर, हमें अधिकार है-सर्व वरदानों पर। हम इनका उपयोग करें। उपयोग से वृद्धि होती है, स्मृति से प्राप्ति होती है। हम इस नशे व स्मृति में रहें कि मैं सर्वशक्तिवान ही सर्वशक्तियों की मालिक हूँ। हम याद करें इन महावाक्यों को कि वरदान में शक्ति है आग को पानी में बदलने की और वरदान की स्मृति द्वारा आग-सम परिस्थिति को पानी-सम शीतल कर दें।

महान कर्त्तव्य बुला रहे हैं

स्वयं भगवान ने भारत भूमि पर महान कर्त्तव्य किये उसे दिव्य करते हुए हमने देखा। अब उसके महान रत्न महान कर्त्तव्य करेंगे और सारा संसार देखेगा। वे अलौकिक और महान कर्त्तव्य होंगे-भक्तों की जन्म-जन्म की प्यास मिटाने के, अनेक आत्माओं को मुक्ति का वरदान देने के, मास्टर विश्व-रक्षक बन सबकी रक्षा करने के, प्रकृतिपति बन प्राकृतिक प्रकोप से पीड़ित रूहों को शान्ति देने के और सारे संसार में ईश्वरीय पालना की लहर फैलाने के। ऐसे महान कर्त्तव्य करने वाली महान आत्माएं क्या कर रही हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि अपने महान कार्यों को भूलकर छोटे-छोटे कार्यों में ही दिखावट, मान और अपमान इन सब मृग तृष्णा में अटकी हुई आत्माएं महान कर्त्तव्य नहीं कर सकेंगी। तो तैयारी करें अपने फरिश्ते स्वरूप को प्रत्यक्ष करने के लिए। तैयारी करें, स्वयं को शक्तिशाली, निर्बन्धन बनाने की। और इसके लिए दिन में अनेक बार पूर्ण लगन के साथ अपने सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करें व इसका आह्वान करें।

अब कहीं भी उलझने का समय नहीं है। चाहे सेवा का क्षेत्र हो चाहे लौकिक कार्य-व्यवहार, त्याग भावना के द्वारा अपने तेज को बढ़ाते चलना है।अब तो स्वयं भगवान हमारा साथी है और फिर हो जायेगा साक्षी। ऐसा न हो कि जब वह साथ दे रहा है, हम साथ न लें और जब साक्षी हो जाये तब मदद के लिए पुकारें। तब वह हमारी आवाज़ नहीं सुनेगा। अब वह आवाज़ दे रहा है, तो उसकी आवाज़ सुनो। हे महान आत्माओं, चित्त को निर्मल करके अपने अन्तिम कर्त्तव्य करने की तैयारी करो। अन्तिम कर्त्तव्य किये बिना सम्पूर्णता नहीं आयेगी। याद करो आपके सुनहरे दिन आपका इंतज़ार कर रहे हैं।